प्रकाशन की तिथि 01.7.2018

ओ३म्

एक प्रति मूल्य : रु० 4.00

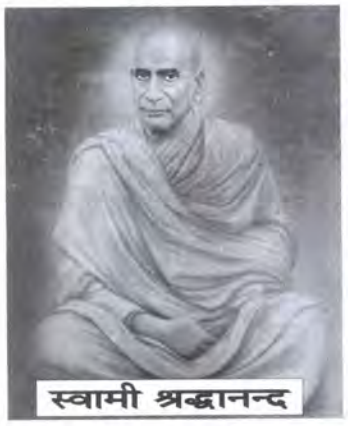

स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः । अथर्ववेद 12.1.12

भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

पं. मदनमोहन मालवीय

वर्ष 41 अंक 7

वार्षिक शुल्क : 50 रुपये

आजीवन शुल्क : 500 रुपये

"शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है"

सनातन धर्मी नेता – पं. मदनमोहन मालवीय

जुलाई 2018 विक्रम सम्वत् 2075 आषाढ़–श्रावण

दूरभाष : 011–23857244

परामर्शदाता : श्री हरबंस लाल कोहली ☼ श्री चतर सिंह नागर ☼ श्री विजय गुप्त ☼ श्री सुरेन्द्र गुप्त ☼ प्रबन्धक : श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा

पर्यावरण भारतीय शास्त्रों में

लेख – दीनानाथ बत्रा

हम प्रकृति से पर्यावरण की सुरक्षा की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। प्रकृति व्यर्थ वस्तुओं को हजम करती है और इसके बदले में सुन्दर से सुन्दरत वस्तुओं का सृजन करती है।

पर्यावरण शग्द–परि+आवरण इन दो शब्दों की सन्धि से बना है, परि का अर्थ है चारों ओर। आवरण से अभिप्रेत है वातावरण–चारों ओर के वातावरण को पर्यावरण कहते हैं।

वेद कालीन समाज में केवल पर्यावरण संबंधी चर्चा ही नहीं अपितु इसके संरक्षण के महत्व को भी स्पष्ट किया गया है।

वेद की ऋचाएं :–

अथर्ववेद में पृथ्वी को माता कहा गया है। इसके पुत्रों ने इसके साथ आत्मीय तथा पारिवारिक संबंध स्थापित किया है। वेद कहता है, **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।'**

भूमि माता की रक्षा तथा जीवन पर्यन्त इससे अभिन्न संबंध स्थापित करना मेरा वैसा ही कर्तव्य है जैसा मेरी जननी के प्रति जिसने मुझे जन्म दिया। इस संबंध में आधुनिक कवियों ने भी अपने भाव व्यक्त किये है :–

'खा अन्न और जल तेरा मां यह अंग सकल हैं बड़े हुए।

तेरी ही वायु से माता यह श्वास है, अब तक अड़े हुए।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन की विषय सामग्री का अथाह भण्डार है। प्रकृति का प्रत्येक कार्य एक स्वाभाविक और नियमित प्रणाली से कार्य का श्रेष्ठ उदाहरण है जैसे दो मित्र एक सिक्के के दो पहलु हैं, वैसे मनुष्य और प्रकृति का संबंध भी अभेद है।

यजुर्वेद कहता है : 'प्रकृति और मनुष्य दो मित्र हैं। मानव प्रकृति को सम्बोधित कर कहता है – मित्रवर मेरा तुम्हारा अटूट रिश्ता है। मैं तुम्हारी प्रत्येक दृष्टि को पूर्ण करने में कभी पीछे नहीं रहूंगी।' अन्त में दोनों मिलकर कहते हैं – ' हम एक दूसरे के सहायक, संरक्षक तथा समायोजित भाव से जीवन यापन करेंगे।

ऋग्वेद की ऋचाएं स्पष्ट संदेश देती हैं।

(क) मा काकम्वीर मुरदहो वृहोवनस्पतिन शस्तीर्विहीनशः'

वृक्ष काकदि पक्षियों के आश्रय स्थल हैं। संपूर्ण प्राणियों को खाद्य सामग्री इन्हीं से प्राप्त होती है। वे वर्षा का मूल कारण और प्रदूषणों के निवारक हैं। अतः वृक्षों का आरोपण तथा संरक्षण मानव जाति का धर्म है।

(ख) ऋग्वेद में आह्वान भी किया है –

'यतते भूमोविश्वनाभिक्षप्तं तदपि रोहतु'

विश्व में जितनी भी भूमि खाली पड़ी है, सब पर वृक्षारोपण करो।

(ग) वेदों में वनस्पतियों से उत्पन्न औषधियों को माता के समान कल्याणकारी बताया गया है।

ऋग्वेद – **'औषधीरिति मातरः तदवो देवीरूप ब्रुते ।'**

अथर्ववेद ने भी इसी भावना को पुष्ट करते हुए कहा है–

वीरूधो वैश्व देवीः उग्राः पुष जीवनी :।

वृक्ष, जन्तु, जगत् के जीवन का मूलाधार है, मनुष्य का जीवन भी वृक्षों के बिना संभव नहीं है।

ऋग्वेद के अनुसार नदियां, तन, मन और आत्मा को निर्मल कर स्फूर्ति और ऊर्जा प्रदान करती हैं। वन, भूतल की प्राकृतिक छतरी तथा राष्ट्र की जीवन रेखा होते हैं। वृक्षों का प्रगतिशील होना राष्ट्र का प्रतीक माना गया है।

उपनिषद् – ईशोपनिषद में कहा गया है कि पृथ्वी पर (जगत्) चराचर जो भी वस्तु है, ईश्वर से आच्छादित है, इसके कण–कण में दिव्यता है।

1. ईशावस्यमिदं सर्वं यत्किंचित् जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुंजीथा, मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

कोई भी वस्तु नहीं है, जो ईश्वर में न हो और जिसमें ईश्वर न हो। परमपिता सर्वव्यापी है।

ईश्वर प्रदत्त सब पदार्थों का भोग ईश्वर का प्रसाद समझ कर करना पुण्य है। दूसरों की सामग्री तथा अस्तित्व छीनकर भोग करना पाप है।

2. यावद्य भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं ही देहिनाम्, अधिकं योऽभिमन्यते स स्तेना दण्डमर्हति ।।

उपनिषद्कार कहता है कि जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है। प्राणियों के लिये अपना पेट भरने के लिए जितना आवश्यक है, उतना ही उनके लिये उपेक्षित है। उससे अधिक की कामना करने वाला चोर है तथा दण्ड का भागी है।

3. उपनिषदों के अनुसार हवा, पानी अग्नि, वृक्ष और जड़ी बूटियों में ईश्वर का अवस्थान है। ये देवता हैं, आराधना करने योग्य हैं।

चरक संहिता – दुर्लभ कृति चरक संहिता में कहा गया है – 'जब तक इस धरती के वन्य, पशुओं और हरे – भरे पेड़ पौधों के बीच प्रकृति का लीला–विलास चलता रहेगा, तब तक मानव जाति फलती फूलती रहेगी।'

मनु– मनु महाराज ने प्रजाजनों को कहा है – ' जो प्रकृति हमें इतना सब कुछ देती है तथा जिसकी कृपा से संपूर्ण जगत् पौषित और जीवन्त है, हम सदा उसकी रक्षा करें। उसकी रक्षा करना प्रत्येक मनुष्य का नैतिक दायित्व है।'

यज्ञ–विधान – वैदिक काल से ही हम पर प्रकृति की कृपा बनाये रखने के लिये मनु ने यज्ञ को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया है। यज्ञ का प्रयोजन पृथ्वी के चक्र को बना कर रखने के लिये किया गया है।

अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यगदिव्यभु प्रतिष्ठते ।

आदित्याज्जंतें वृष्टिश्वरष्टेरंत्रंप्रजाः ।।

अग्नि में डाली आहुति सूर्य की किरणों में उपस्थित होती है। उसके संसर्ग से अन्तरिक्ष में इस प्रकार का वातावरण निर्मित हो जाता है जिससे मेघों का संग्रह होने लगता है वे समय पाकर पृथ्वी पर बरसते हैं। औषधि, वनस्पति, लता, फल, खाद्य जीवन शक्तियां, अग्नि, पृथ्वी, वायु, सूर्य, चन्द्र पृथ्वी एवं जल के रूप में हमारे संरक्षण तथा संवर्धन के लिये प्राप्त होते हैं।

'अग्नि वै देवानां मुखम्' अग्नि देवताओं को मुख है। देवता पदार्थों को प्राप्त करते हैं और वह आहुति देने वाले को लौटा देते हैं। **'देहि मे ददामि ते'**

मनुस्मृति में फिर से कहा गया है– जो व्यक्ति वनस्पतियों को जिस प्रकार चोट पहुंचाता है, ऐसे दोषी व्यक्ति को संबंधित क्षेत्र के राजा द्वारा

शेष पृष्ठ 6 पर ....

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रार्थना से संतुष्टि और बल मिलता है

– डॉ. देवेश प्रकाश आर्य

प्रार्थना का सीधा सा अर्थ है 'मांगना'। अर्थना का अर्थ है मांगना, विशेष ढंग से मांगने का अर्थ हुआ प्रार्थना। लेकिन प्रार्थना केवल मांगने को ही नहीं कहते बल्कि अपने हृदय की भावनाओं को अपने अंदर की कृतज्ञता को परमात्मा के नाम को जब भक्त अपने दिल से व्यक्त करता है जिन शब्दों को वह प्रयोग करता है उसका नाम 'प्रार्थना' है।

'प्रार्थना' का अर्थ कोई शिकायत करना नहीं है हाथ जोड़कर यह कहना कि भगवान मेरे पास ये नहीं है, वह नहीं है और पड़ोसी के पास इतना क्यों है तो इसका नाम 'प्रार्थना' नहीं है। प्रार्थना वह शक्ति है जो हृदय से निकलती है और परमात्मा तक पहुंचती है लेकिन 'प्रार्थना' शक्तिवान तब होती है जब प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ जुड़ जाता है। व्यक्ति अपना कर्त्तव्य निभाता हुआ अनेक प्रकार के पुरुषार्थ करता हुआ जिस समय अपने आपको अशक्त अनुभव करता है असहाय अनुभव करता है, तब शक्ति के लिए वह निवेदन करने लगता है परमात्मा के पास बैठकर उसका नाम पुकारते हुए तो बस, वही 'प्रार्थना' बनती है। यह ध्यान रखिये कि प्रार्थना से मनुष्य की आत्मा में संतुष्टि अवश्य मिलती है। हृदय को बल मिलता है और यह अनुभव होता है कि मैं अकेला नहीं मेरे साथ में कोई शक्ति है, अज्ञात शक्ति जिसके अनेक–अनेक नाम हैं। मनुष्य उस अज्ञात शक्ति को कई तरह से पुकारता रहता है। अगर हम अपने पवित्र ग्रंथों को देखें तो सबसे पहले जिन ग्रंथों के प्रति हमारा ध्यान जाता है वह 'वेद' है।

ऐसा कहा जाता है कि संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक 'ऋग्वेद' है। उसके बाद फिर अन्य पुस्तकें हैं। अगर आप 'वेदों' को देखें तो वेदों में अनेक प्रार्थनाएं हैं, और सभी प्रार्थनाएं बड़ी सुंदर और मन को प्रेरणा देने वाली है, हृदय को छूने वाली हैं।

मेरे प्रभु! मैं और किस दर जाऊं? किससे कहूं? कि मेरी पुकार सुन? हे भगवान्! मैं वह इंसान नहीं कि हर किसी के दरवाजे पर जाकर गिड़गिडाऊं और गर्दन झुकाऊं? मांगने के लिए मेरी गर्दन किसी के सामने नहीं झुकी, अगर झुकी है तो पहली बार तेरे दरवाजे पर तेरे दर पर झुकी है। इस लिए मेरे सजदे की सिर झुकाने की कद्र कर लेना भगवान, मेरी लाज रख लेना मैंने तेरे सामने अपनी गर्दन झुकाई है।

जो इंसान भक्त है और भगवान के दर पर प्रार्थना करता है उसकी आंखों से जो आंसू निकलते हैं। दुनिया में कोई और आंसू की कद्र करे, न करे लेकिन भगवान आंसू की कद्र करता है। वहां आपके आंसू का हिसाब जरुर होता है, आपकी फरियाद अगर सच्ची है। क्योंकि अनेक संतों ने कहा झूठे उम्मीदवार बनकर सच्ची प्रार्थना नहीं करना, सच्चे उम्मीदवार बनकर सची प्रार्थना कितनी जल्दी स्वीकार होती है और किस माध्यम से स्वीकार होती है। किस तरह से सहायता वाले हाथ तुम्हारे तक पहुंचते हैं, अनेक बार ऐसा हुआ है। कभी–कभी अपनी चतुराई, अपनी बुद्धि, अपना पुरुषार्थ, अपनी शक्ति, जब अपना काम नहीं कर पाते तब उस समय हाथ जोड़कर, अपना माथा झुकाकर, अपने हृदय से पुकारकर अपने परमात्मा का ध्यान करके कहना चाहिए कि मेरी बुद्धि थक गई, मेरा पुरुषार्थ चुक गया, मेरा सामर्थ्य जबाब दे गया, अब मैं क्या करूं? तेरे सम्मुख हूं मेरे प्रभु, अब तो आप ही दया करो, और कृपा जरूर होती है।

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

सभी निरोग हों, सभी स्वस्थ हों सभी सुखी हों, कोई भी रोगी न हो, कोई भी दुःखी न हो। परमात्मा मैं जहां भी देखूं चारों तरफ मुझे सुख ही सुख दिखाई दे। ऐसी शक्ति दो और ऐसी कृपा करो कि सर्वत्र मनुष्य सुख ही देखे सुख का साम्राज्य हो। लेकिन इससे भी आगे चलकर 'ध्यान' जाता है हमें ऋषि वेदव्यास की प्रार्थना –

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गम् न पुनर्भवम्।
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनां आर्तिनाशनम्॥

हे भगवान ! आपके सम्मुख बैठकर मैं कुछ मांगने लगा हूं आपसे मुझे राज्य नहीं चाहिए, और स्वर्ग की कामना भी नहीं है, मोक्ष भी नहीं चाहिए लेकिन मैंने जो जप किया, जो तप किया, आपका सुमिरन किया है इससे मैं कुछ मांगू तो केवल एक ही प्रार्थना है कि इस संसार में जितने भी दुःखी लोग हैं, जितने भी दुःख से संतृप्त प्राणी हैं उन सबके दुःख को दूर करने की शक्ति चाहता हूं भगवान आप मुझे इतनी शक्ति दो कि हर किसी रोते हुए व्यक्ति को हंसा सकूं, हर किसी दुःखी व्यक्ति को मैं खुशी दे सकूं, हर किसी दुःखी व्यक्ति को मैं खुशी दे सकूं। ऐसा वरदान मैं आपसे चाहता हूं, जिधर जाऊं मैं उधर खुशियां बांटू।

'प्रार्थना का आनंद तब है जब व्यक्ति अपने लिए नहीं संसार के लिए मांगता है तो भगवान जल्दी कृपा करते हैं।

23 जुलाई – तिलक व आजाद की जयंती

आजादी के दीवाने तिलक और आजाद

अपने जीवन में अनवरत साधना, कठिन तपश्चर्या तथा महान त्याग के द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के भव्य भवन की नींव डालने वाले लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक कर्मठ और साहसी सेनानी थे। उनके ओजस्वी व्यक्तित्त्व से क्षत्रित्त्व का विशेष तेज टपकता था, जो विद्या, बुद्धि, सुविचारों की सात्विकता की आभा से प्रदीप्त हो उठता था। सतत कर्मठता उनके जीवन की विशेषता थी।

'देश की स्वतंत्रता के प्रश्न पर 'आजाद' को अंग्रेजी सरकार से समझौते का विचार असह्य था। उनका स्पष्ट कहना था कि अंग्रेज जब तक इस देश में शासक के रूप में रहें, हमारी गोलियां चलती रहनी चाहिए। समझौते का कोई अर्थ ही नहीं है। अंग्रेजों से हमारा एक ही समझौता हो सकता है और वह है–वे अपना बोरिया बिस्तर बांधकर यहां से चल दें।'

लोकमान्य तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को तत्नागिरी (महाराष्ट्र) में हुआ था। इनके पिता गंगाधर रामचन्द्र तिलक पूना जिले के स्कूलों के डिप्टी इन्सपेक्टर थे। लोकमान्य तिलक बचपन से ही बड़े मेधावी तथा प्रखर बुद्धि के थे। आठ वर्ष की आयु में ही आपने गणित, रूपावती, समाजचक्र तथा आधा अमरकोश कंठस्थ कर लिया था। 10 वर्ष की आयु में आपने पूना के सिटी–स्कूल में प्रवेश किया। 1872 में मैट्रिक की परीक्षा पास कर 1876 में डेक्कन कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1879 में एल.एल.बी. की परीक्षा पास की। उन्होंने निश्चय किया कि जीवन भर सरकारी नौकरी न करके देश–सेवा का कार्य ही करता रहूंगा। तिलक ने शिक्षा, समाज, अध्यात्म, राजनीति तथा देश हित के लिए जीवन पर्यन्त कार्य करते रहे। 'तिलक' का प्रसिद्ध नारा लोगों के जुबान पर आ गया था, लोग मंत्र की तरह इसे जपते थे– **'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा।'**

इसी परिप्रेक्ष्य में आज ही के दिन एक और क्रांतिवीर महापुरुष ने भारत मां को आजाद कराने के लिए जन्म लिया था– उनका नाम था चन्द्रशेखर 'आजाद' ।

'आजाद' का जन्म एक बहुत ही निर्धन परिवार में हुआ था। अभावों की चुभन को उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में अनुभव किया था। बचपन में भांवरा (मध्यप्रदेश) तथा उसके आसपास के आदिवासियों तथा किसानों के जीवन को वे काफी नजदीक से देख चुके थे। घर से भगकर वे काशी (वाराणसी) पहुंचे जहां वे देश प्रेम के रंग में रंग गये, सत्याग्रह किया, बेंत खाए और फिर क्रांतिकारी दल में शरीक हो गए। पंडित रामप्रसाद के नेतृत्व में उनके धार्मिक विचारों पर आर्य समाजी प्रभाव पड़ा और वे छुआछूत, मूर्तिपूजा आदि को व्यर्थ समझने लगे। बाद में भगतसिंह के संपर्क में आने पर उन्होंने निरीश्वरवादी समाजवादी दृष्टिकोण अपनाया।

आजाद का स्पष्ट मानना था कि आजादी केवल अहिंसा के मार्ग पर चलकर नहीं मिलेगी। जहां कहीं आजाद ने अत्याचार होते देखा, उन्होंने तुरन्त यथा शक्ति उसका प्रतिकार किया।

'आजाद' तो जीवन पर्यन्त 'आजाद' ही रहे, ब्रिटिश सरकार उन्हें जिन्दे जी तो नहीं गिरफ्तार कर पायी। उन्होंने स्वयं अपने आपको जिन्दगी से 'आजाद' कर लिया था।

सम्पादकीय

-आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

विश्व में लगभग 200 देश हैं। सम्भवतः भारत ही अपवाद स्वरूप एक मात्र ऐसा देश है जहां कि बहुसंख्यकों (मूल निवासियों) का जनसंख्या में प्रतिशत लगातार घटता रहता है। यह क्रम 1881 ई. से निरन्तर जारी है जबसे जनगणना आरम्भ हुई है। हर 10 वर्ष में हिन्दू का प्रतिशत, एक प्रतिशत सरकारी आकंड़ो के अनुसार कम होता है या दिखाया जाता है क्योंकि गैर सरकारी अनुमान के अनुसार गिरावट लगभग डेढ़ या दो प्रतिशत हर 10 वर्ष में है। लगभग सभी दल मौन रहते हैं। वे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे उन्हें मालूम ही न हो। सरकारी आंकड़े प्रकाशित होने पर किसी भी राजनीतिक दल द्वारा कुछ नहीं कहा जाता है। कुछ सामाजिक हिन्दू संगठन बोलते हैं जिसे महत्व नहीं दिया जाता है क्योंकि वे प्रदर्शन, धरना, भूख, हड़ताल, आमरण अनशन जैसा कोई कार्यक्रम नहीं करते हैं।

जब कट्टरपंथी मुस्लिम मुल्ला, मौलवी, इमामों ने यह कहा कि परिवार नियोजन, नसबन्दी उनके मजहब के अनुकूल नहीं है तब उसके उत्तर में सभी दलों के हिन्दू नेताओं ने खुलकर आश्वासन दिया कि उन्हें मजबूर नहीं किया जाएगा और न ही जबर्दस्ती की जाएगी क्योंकि यह कार्यक्रम स्वैच्छिक है अतः जो अपनाना चाहे वह अपनाए। यदि हिन्दू महासभा या सावरकर वादी संगठनों से पत्रकारों द्वारा पूछा जाता तो उन्हें यह उत्तर मिलता कि किसी भी समुदाय के केवल अधिकार ही नहीं होते हैं बल्कि दायित्व तथा कर्त्तव्य भी होते हैं अतः मुस्लिम समाज को मुल्ला मौलवी इमाम समझाएं कि वे छोटे परिवार का महत्व समझें और उसे अपनाएं ताकि परिवारों में स्मृद्धि व खुशहाली आए और देश से गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी दूर हो। यदि ऐसा नहीं किया गया तो चीन जैसी छोटे परिवार की नीति लागू कराई जाएगी जिसमें दूसरे बच्चे के बाद और बच्चा होने पर जुर्माना व जेल की सजा का प्रावधान है।

कुछ प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों के विचार इस प्रकार हैं:-

76 वर्षीय वकील – 20 वर्ष बाद देखना। देश का प्रधान मंत्री कोई मुस्लिम ही होगा। बी.डी. ओ. ने भी कहा कि वकील साहब ठीक कह रहे हैं। जब उनसे कहा गया कि काम करने वाले संगठन को बल प्रदान करें। आर्थिक सहयोग दें या समय दें। उत्तर मिला मैं तो 5–10 साल तक ही रहूंगा। मेरे मरने के बाद क्या होगा इस पर मैं क्यों सोचूं? जो होंगे वे अपने आप भुगतेंगे।

70 वर्षीय पूर्वप्राध्यापक – मुस्लिम राज तो निश्चित रूप से आने वाला है क्योंकि हम छोटे परिवार के प्रबल समर्थक हैं और वे बड़े 2 परिवार के समर्थक हैं। एक चींटी भला हाथी से लड़ सकती है इसलिए कोई सहयोग नहीं दूंगा।

50 वर्षीय डाक्टर– मेरी तो केवल दो लडकियां थी जिन्हें अच्छा पढ़ा लिखाकर योग्य बना दिया है। देश के बारे में, मैं क्यों सोंचू? (ऐसे डाक्टर छह बच्चों का पालन पोषण भली प्रकार से कर सकते हैं)

62 वर्षीय इंजीनियर– मेरे 3 बच्चे हैं। तीनों की शदियां हो चुकी है। मुझे अच्छी पेन्शन मिलती है। मैं तो निश्चिंत हूं। हिन्दुओं का प्रतिशत तो घटना ही है जब मुसीबत आएगी तब वे निपटेंगे जो होंगे। मैं तो पूजा पाठ में लगा रहता हूं। मुझे राजनीति से कोई लगाव नहीं है।

48 वर्षीय व्यापारी– मैं तो मध्यम परिवार चाहता हूं लेकिन लड़का नहीं मानता है। एक ही बच्चा है और पत्नी का आपरेशन करा दिया है अतः हिन्दुओं पर संकट तो आना ही है। मैं कुछ करने में असमर्थ हूँ।

इस प्रकार हमने देखा कि बुद्धिजीवी वर्ग जनसंख्या के महत्व को जानता है किन्तु कुछ देना या करना नहीं चाहता है।

अन्त में, हम कहेंगे कि यदि हिन्दू ने वीर सावरकर और भाई परमानन्द की पार्टी "अखिल भारत हिन्दू महासभा" मन्दिर मार्ग नई दिल्ली–110001 को मजबूत व शक्तिशाली बनाने में रूचि नहीं ली तो भविष्य में उसकी पीढ़ियों को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। ईश्वर हिन्दुओं को सद्बुद्धि दे।

प्रो. कुलदीप सलिल की रचनाएँ

उम्र भर ना हुआ मन बैरागी, एक धोका ही था मन बैरागी,
धूप में जलते रहे नंगे बदन, साये–साये चला मन बैरागी,
शहर में उनके था कुछ ऐसा तिलिस्म, गया खिंचता हुआ मन बैरागी,
दुनिया थी और तमाशा उसका, मैं था और था मेरा मन बैरागी,
खेलते देखे जो नाती–पोते, देखता रह गया मन बैरागी,
उम्र के साथ ये क्या और भी अब, मनचला हो गया मन बैरागी !
है जरूरी कि रहे जग में भी तू, और जग से तेरा मन बैरागी,
पाई है किसने सलिल इससे निज़ात, हुआ किसका भला मन बैरागी !

हर ग़लत काम को अब तो सही कहना होगा,
यहां रहना है तो तुमको यही कहना होगा
पूरी आज़ादी है कहना हो जो बेखौफ कहो,
हम जो चाहें मगर तुमको वही कहना होगा ।

खुशबू और खुशियों की महफिल अपने साथ तुम्हीं से है,
बातें तो होती रहती है बनती बात तुम्हीं से है
तुम जब नहीं भी होते हो, होता सब कुछ है यों तो,
बिजली होती, बादल होते पर बरसात तुम्हीं से है

दुनिया की फिक्र करके है इक दुनिया मर गयी,
दुनिया की फिक्र छोड़िये मत सर को फोड़िये
कब तक लड़ोगे दुनिया से, यूं कीजिये सलिल
रिश्ता हसीन–सा किसी दिलबर से जोड़िये

दुख में शामिल वो हो के दुनिया के,
कुछ तो दुख का इलाज करते हैं
राहे–खिदमत पे चलने वाला ही
दिल पे दुनिया के राज करते हैं

–प्रो. कुलदीप सलिल

प्यारे बच्चे

पाठशाला से तो समय पर छुट्टी हो गई थी। मगर उन तीन मित्रों ने 'मदर–डे' के उपलक्ष्य में घर जाकर अपनी–अपनी माताओं को एक–एक फूलों का गुच्छा देने का निर्णय लिया और उस गुच्छे के साथ लगाने के लिए उन्होंने बहुत ही सुन्दर–सुन्दर रंगों से एक–एक कार्ड भी बनाया जिस पर 'हैप्पी मदर डे' लिखा हुआ था। वाक्य लिखने तथा फूल एकत्रित करने और उनके गुच्छे बनाने में उन्हें घर जाने में बहुत विलम्ब हो गया। तीसरी कक्षा में पढ़ने वाला सौरभ भी अब घर पहुंचा तो वह इस बात से बहुत प्रसन्न था कि वह जाते ही अपनी मां को फूलों का गुच्छा देते हुए 'हैप्पी मदर डे' कहेगा तो उसकी मां उससे कितनी प्रसन्न होगी। वह फूलों का गुच्छा पीठ की ओर छुपाए–छुपाए धीरे–धीरे आगे बढ़ रहा था कि तभी मां ने कड़कती हुई आवाज में पूछा, 'कब की छुट्टी हुई है और तुम अब आ रहे मुंह लटकाए... कहां थे इतनी देर...।'

'मां बात यह है कि.....'

'आ मैं बताती हूं तुम्हें बात...' दो चार थप्पड़ लगाते–लगाते हुए वह सौरभ को भीतर तक ले आई, 'गन्दे बच्चों के साथ घूमता रहा होगा कहीं....' कहते–कहते एक और झांपड़ उसके मुंह पर दे मारा।

'मां मेरी बात सुनो तो...' सौरभ ने कहना चाहा।

'मुझे नहीं सुननी है तुम्हारी बात....' मां ने कहा और अपने पैर पटकती हुई रसोई में कुछ काम करने के लिए चली गई।

बेचारे सौरभ के अरमान मन में ही रह गए। वह बहुत देर तक रोता रहा। वह थका हुआ तो था ही। अतः उसे सुबकते–सुबकते स्कूल की वर्दी के साथ ही नींद आ गई। मां रसोई से काम निपटाकर आई तो उसने देखा कि सौरभ स्कूल की वर्दी के साथ ही सो गया है। उसने उसके पास ही पलंग पर पड़ा बैग उठाया तो उसके नीचे से उसे बहुत ही सुन्दर ढंग से बनाया गया सुन्दर फूलों का एक गुच्छा मिला जिसके एक ओर एक कार्ड चिपका हुआ था जिस पर बहुत ही सुन्दर–सुन्दर रंगों से "हैप्पी मदर डे' लिखा हुआ था और नीचे एक ओर लिखा था 'मां का लाड़ला सौरभ।' मां ने एक नजर सोए हुए सौरभ पर डाली जो अब भी धीरे–धीरे सुबक रहा था।

अब रोने की बारी मां की थी। वह फूलों के गुच्छे को बार–बार चुमती हुई अपनी आंखों से झर–झर आंसू बहा रही थी।

–भगवान् देव 'चैतन्य'

क्या द्रौपदी पाँच पाण्डवों की पत्नी थी

द्रौपदी पाँच पाण्डवों की पत्नी थी। इस प्रचलित धारणा के विरूद्व विद्वान लेखक ने शास्त्र सम्मत सार्थक तर्क दिए हैं।

अपने ग्रन्थ 'महाभारत' पर एक हजार प्रश्नोत्तर से कुछ प्रशनोत्तर यहां दे रहा हूँ जिससे यह साफ हो सके कि द्रौपदी जी के पति धर्मराज युधिष्ठिर ही है।

प्रश्न– यह बात प्रसिद्व है कि जब पाण्डव द्रौपदी को स्वयंवर से जीत कर लाए और लौटकर उन्होंने बाहर से ही कुन्ती से कहा कि आज हम एक विशेष–वस्तु लाए हैं। तो कुन्ती ने उन्हें कहा की– आप सभी भाई उसे बांटकर खाओ।' क्या इसलिए द्रौपदी पाँच पतियों की पत्नी थी?

उत्तर–यह कथ्य प्रक्षिप्त है क्यों कि अर्जुन ,द्वारा लक्ष्य–वेध किए जाने पर यह सूचना कुन्ती को देने के लिए नकुल व सहदेव को साथ लेकर युधिष्ठिर वहां से तुरन्त पहले ही चले गये थे। कुन्ती को मालुम था की भीम व अर्जुन द्रौपदी को स्वयंवर में जीतकर आ रहे हैं। अतः बांट के खा लेने वाली बात कल्पना–प्रसूत है और इस प्रकार की विवेक हीन बात कुन्ती जैसी विदुषी द्वारा कैसे कही जा सकती है? एकचक्रा नगरी से द्रौपदी के स्वयंवर की बात सुनने पर कुन्ती ने स्वयं ही वहां जाने का प्रस्ताव रखा था तथा मार्ग में महर्षि व्यास ने भी पांचाल देश जाने की अनुमति देते हुए कहा था कि द्रौपदी को पाकर तुम सब लोग सुखी होओगे, इस में संशय नही। 'धौम्य पुरोहित का वरण करनें पर पाण्डव आश्वस्त हुए थें कि अब 'स्वयंवर में द्रौपदी भी हमें मिल जाएगी। भीम तथा अर्जुन द्रौपदी को लेकर आये तो उनके साथ ब्राह्मण – मण्डली,श्रीकृष्ण व बलराम भी साथ आए थे। अतःन तो पाण्डवो ने कहा की हम भिक्षा लेकर आए है और न कुन्ती ने ही कहा कि तुम उसे बांट कर खा लो। स्वयंवर वाले दिन पांडवो का भिक्षा लेनके लिए जाना तथा कुंन्ती को यह सब मालुम होते हुए भी कि अर्जुन ने द्रौपदीको स्वयंवर में जीत लिया है, उसके द्वारा यह कहना कि 'सभी भाई बांटकर खा लो' अविश्वनीय एवं निन्दनीय है....

प्रश्न–तो पांचों पाण्डवों में से द्रौपदी किसकी पत्नी थी?

उत्तर–यघपि स्वयंवर की शर्त अर्जुन ने की थी मगर द्रौपदी युधिष्ठिर की पत्नी थी। इस बात के अनेक प्रमाण एवं तथ्य महाभारत के गहन चिन्तन से हमें प्राप्त हो जाते हैं। कुन्ती द्वारा बांट कर खाने वाली बात तो एकदम ही असंभव एवंअविश्वनीय है। यदि बांटकर खाने वाली बात हैं तो फिर वह भीम तथा अर्जुन की पत्नी होनी चाहिए क्योंकी युधिष्ठिर तो नकुल और सहदेव को लेकर पहले ही लौट आये थे। द्रौपदी को तो भीम तथा अर्जुन ही लेकर आए थे तथा यह बंटवारा उसी दिन हो जाना चाहिए था। जबकि यह बंटवारे की बात नारदजी के मुंह से स्वयंवर के लगभग बीस वर्षों के बाद कहलवाई गई। वास्तवमें बांटकर खाने वाले प्रक्षेप को व्यावहारिक एवं सत्य बनाने के लिए प्रक्षेप कल्पित करने महाभारत में जोड़ने का प्रयास किया गया मगर गहन चिन्तन एवं तथ्यों के आधार पर उन प्रक्षेपों का महल स्वयं ही धराशायी हो जाता है.....

प्रश्न–द्रुपद की हार्दिक इच्छा थी कीअर्जुन ही द्रौपदी का पति बनें तथा स्वयंवर की शर्त भी अर्जुन ने ही पूरी की थी और स्वयंवर की शर्त पूरी होते ही द्रौपदी ने अर्जुन के गले में वरमाला डाल कर उसे अपना पति बना लिया। ऐसी दशा में द्रौपदी को अर्जुन की ही पत्नी क्यों न मान लिया जाए?

उत्तर– केवल स्वयंवर की शर्त पूरी करने से ही कोई किसी का पति नही हो जाता था। विवाह–संस्कार की प्रक्रियाओं के बाद ही कोई किसी का पति बनता है। आज की स्थिति में भी यदि हम कल्पना करें कि कोई व्यक्ति किसी कन्या को बलपूर्वक या किसी प्रकार सेभी प्राप्त कर लेता है तो क्या इतने मात्रसे ही कानूनी व सामाजिक रूप से वह उसका पति माना जा सकता है? विवाह–संस्कार की सप्तपदी प्रक्रिया के पूर्ण होने पर ही आज भी विवाह को कानूनी–रूप से मान्यता प्राप्त है। विधिवत् विवाह–सस्कार हो जाने के बाद ही वर वधू पति–पत्नी बनते है और यदि माला डालने से ही विवाह मान लिया जाए तो भी द्रौपदी पांचों भाईयो की पत्नी कैसे सिद्व हो गई? फिर तो वह अर्जुन की ही पत्नी हुई। मगर विवाह के लिए केवल शर्त पूरी कर देना ही पर्याप्त नहीहै। महाभारत में ही भीष्म युधिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहते है कि 'मानव' के हित से सम्बन्ध रखने वाला कोई भी कर्म व्यवस्था के अधीन आता है। सब विचारवान् पुरूष एकत्र होकर यह विचारकर लें कि 'अमुक कन्या अमुक पुरूष को देनी चाहिए' तो यह व्यवस्था ही विवाह का निश्चय कराने वाली है। जो लोग भिन्न–भिन्न व्यक्तियों से कहते हैं कि मै आपको अपनी कन्या दूँगा; जो कहते है। अवश्य नहीं दुंगा। जो कहते हैं अवश्य दूंगा उन की सब बाते कन्यादान से पहले कही होने के कारण ना कही के समान ही है। जब तक कन्या का पाणिग्रहण–संस्कार नही हो जाए, तब कन्या को मांगा जा सकता है। सप्तपदी के सातवें पग में पाणिग्रहण के मन्त्रों कि सफलता होती है। इस प्रकार भले ही द्रुपद की इच्छा रही हो कि द्रौपदी अर्जुन की पत्नी बने तथा अर्जुन ने स्वयंवर की शर्त पूरी कर ली हो मगर बड़े–बूढों नें मिलकर निर्णय किया कि द्रौपदी का विवाह युधिष्ठिर से किया जाए और तब जिस दिन युधिष्ठिर के साथ द्रौपदी का पाणिग्रहण सप्तपदी सहित पूरा हो गया उसी दिन द्रौपदी युधिष्ठिर की पत्नी हो गई । मनु महाराज नें भी कहा है –' पतित्व सप्तमे पदे।

प्रश्न– क्या इतिहास में इस प्रकार की घटनाए हुई है?

श्रीराम जी द्वारा स्वयंवर कि शर्त पूरी कर लेंने पर उनका विवाह पूर्ण नही हुआ था बल्कि विधिवत् विवाह–सस्कार होने के बाद ही वे पति–पत्नी बने थे। भीष्म का शिराज की तीनों कन्याओं अम्बा,अम्बिका तथा अम्बालिका कों विजय करके लाए थे मगर उनमे से बड़ी को उसकी इच्छानुसार राजा शाल्व के पास भेज दिया था तथा दो का विवाह विधिवत् विचित्रवीर्य के साथ हुआ था। राक्षस पुलोमा ने अग्निदेव से कहा था। कि जिस कन्या का विवाह उस के पिता ने भृगु के साथ कर दिया वह उसने पहले मुझे दी थी अतः यह भृगु की नही, मेरी पत्नी है। अग्निदेव ने कहा कि इसमे संदेह नही की पहले कन्या तुम्हें दी गई थी मगर विधिपूर्वक मन्त्रोच्चार करते हुए तुमने उसके साथ विवाह नही किया है इसलिए इसके पिता ने भृगु को दिया है। गंगा ने पहले राजा प्रदीप को वरा था मगर राजा प्रदीप ने उसका विवाह अपने पुत्र शान्तनु के साथ करके उसे अपनी पुत्र–वधू बनाया था। उतरा के साथ भी यही हुआ उसके पिता विराट् ने उसे अर्जुन को दे दिया मगर अर्जुन ने उसका विवाह अपने पुत्र अभिमन्यु से किया.....।

प्रश्न– क्या द्रौपदी और युधिष्ठिर के विवाह के लिए द्रुपदादि तथा अर्जुन भी सहमत थे?

उत्तर–युधिष्ठिर ने अर्जुन से कहा की तुमने द्रौपदी को जीता है इसलिए तुम्हारे साथ ही इसकी शोभा होगी। तुम अग्निदेव के साक्ष्य में विधिवत् इसका पाणिग्रहण करों। मगर अर्जुन ने उत्तर में कहा कि बड़े भाई के अविवाहित होने की दशा में छोटे का विवाह होना धर्म–संगत नही हैं ऐसा व्यवहार अनार्यो में देखा गया है–आर्यों का यह धर्म नही है। अतः आप मुझे पाप का भागी न बनाएं। पहले आपका विवाह होना चाहिए। अर्जुन ने शास्त्र –सम्मत ही बात कही थी क्योंकि मनु महाराज भी ऐसी ही व्यवस्था दी है। अर्जुन के विचार जानने के बाद ही कुन्ती की सम्मति से युधिष्ठिर महाराज द्रुपद के पास गए तथा अपना परिचय देने के बाद द्रुपद को अर्जुन की भावना से अवगत कराते हुए कहा कि अभी मेरा विवाह नही हुआ है। इस पर महाराज द्रुपद ने कहा यदि ऐसा है तब आप ही मेरी पुत्री का विधिवत् पाणिग्रहण कर लें...., महर्षि व्यासजी की इसमें सम्मति थी।

प्रश्न– द्रौपदी का युधिष्ठिर के साथ पाणिग्रहण–संस्कार का महाभारत मे कोई उल्लेख है?

उत्तर– जब महर्षि व्यासजी एकान्त में द्रुपद से बात करके लौटे तो युधिष्ठिर से आकर कहा–पाण्डुनन्दन ! आज ही तुम लोगों के लिए पुण्य दिवस है आज चन्द्रमा भरण पोषण–कारक पुष्य नक्षत्र पर जा रहा है। इसलिए तुम आज ही तुरन्त कृष्णा का पाणिग्रहण करो। द्रौपदी के विवाह का वर्णन आदि पर्व में इस प्रकार किया गया है। तत्पश्चात् वेदके पारंगत मन्त्रज्ञ धौम्य ने प्रज्वलित अग्नि की स्थापना करके मन्त्रों द्वारा आहुतियां दी और युधिष्ठिर के साथ कृष्णा का गठबन्धन कर दिय। वेदज्ञ विद्वान् पुरोहित ने उनका पाणिग्रहण करा, अग्नि की परिक्रमा करवाई। फिर विवाह सम्पन करकर पुरोहित जीराजभवन से चले गए। इस प्रकार युधिष्ठिर के साथ द्रौपदी का विवाह होने के तो महाभारत में प्रमाण है मगर अर्जुन के साथ विवाह होने का कोई एक भी प्रमाण नही है।

प्रश्न– कहा गया है कि पिछले जन्म में पति–प्राप्ति के लिए एक मुनि की कन्या ने कठोर तप किया था तथा भगवान शंकर ने उसे पांच पतियों की पत्नी होने का वरदान दिया था। क्या यह सत्य नही है?

उत्तर– प्रक्षेप–कर्ता को एक झूठ को सत्य सिद्व करनें के प्रयास में अनेक कपोल कल्पित प्रसंग गढने पड़ें तथा इसी के अन्तर्गत उसने मुनि – कन्या के बात कल्पित की मगर इस माध्यम से उसने शंकर कों भी अल्पज्ञ तथा हास्यास्पद बना दिया।पांच पतियों का वरदान देने के लिए शिवजी तर्क देते हैं कि तुमने मुझे पति दीजिए। यह वाक्य पांच बार दोहराया इसलिए तुम्हें पांच पतियों का वरदान दिया। क्या शंकर इतने अल्पज्ञ थे कि उस कन्या के मनोभाव को नही समझ सकें? क्या वे इस प्रकार का वेद–विरूद्व वरदान दे सकते है? क्या वे जरा–सा भी लोक व्यवहार नही जानते थे? इससे तो महाराजा द्रुपद, महर्षि वेद– व्यास तथा धृष्टद्युम्न अधिक बुद्विमान है जो इस प्रकार के कार्य को अधर्म तथा वेद–विरूद्व बताते हैं।

प्रश्न– महाभारत में बताया गया है कि द्रौपदी के युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य, भीम से सुतसोम, अर्जुन से श्रुतकर्मा,नकुल से शतानिक तथा सहदेव से श्रुतसेन नाम के पांच पुत्र पैदा हुए। क्या इससे भी यही सिद्व नही होता कि द्रौपदी के पांच पति थे.....?

उत्तर–हमने पहले भी कहा है कि एक झूठ लिखनें वाले को उस झूठ की संगति बिठाने के लिए इतने झूठ लिखने पड़े कि स्वयं ही उसके झूठ की पोलें खुलती चली गई। द्रौपदी के पांच पुत्र पांचो पाण्डवों से होने कि कल्पना भी तथ्यहीन है। पाण्डवों के अपनी–अपनी पत्नियों से ही ये पुत्र थे।

–शेष अगले अंक में.....

महापुरुषों के 'नीतिवचन' हमारे पथ प्रदर्शक

ते पुत्रा ये पितुर्भक्ताः स पिता यस्तु पोषकः।
तन्मित्रं यस्य विश्वासः सा भार्या यत्र निर्वृतिः ॥

अर्थात् पुत्र वही है जो पिता का भक्त है, पिता वह है जो पुत्रों का पालन-पोषण करता है, मित्र वह है जिस पर विश्वास हो और पत्नी वह है जिससे सुख प्राप्त हो।

परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
वर्जयेत् ताट्टशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥ (चाणक्य)

अर्थात् जो सामने मीठी-मीठी बातें कर और पीछे से कार्य बिगाड़ दे, ऐसे मित्र का त्याग कर देना चाहिए क्योंकि वह उस घड़े के समान है जिसमें ऊपर से दूध और भीतर में विष भरा हो ।

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलंकृतोऽपि सन्।
मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः? ॥

अर्थात् दुर्जन (बुरा मनुष्य) व्यक्ति विद्या से विभूषित यानि विद्वान होते हुए भी त्याज्य है, छोड़ने योग्य है। क्या मणि से युक्त सांप भयंकर नहीं होता, अर्थात् अवश्य होता है।

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाकपटुता, युधि विक्रमः।
यशसि चाऽभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥ (भर्तृहरि)

अर्थात् विपत्ति में धौर्य, समृद्धि में सहनशीलता, विद्वानों के समाज में वाक्पटुता (वाणी की दक्षता), युद्ध में पराक्रम, यश के संग्रह में रुचि और शास्त्रों में आसक्ति, यह सब सज्जनों का स्वाभाविक गुण है।

पंचाग्नयो मनुष्येण परिचर्याः प्रयत्नतः।
पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च भरतर्षभ ॥

अर्थात् हे धृतराष्ट्र! मनुष्य को इन पांच अग्नियों की परिचर्या बहुत ही सावधानी पूर्वक करनी चाहिए। ये पांच अग्नियां-माता, पिता, गुरु, अग्नि और आत्मा हैं। इनकी कभी भी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

पंचैव पूजयंल्लोके यशः प्राप्नोति केवलम् ।
देवान् पितृन मनुष्यांश्च विक्षूनतिथि पंचमान् ॥ (विदुरनीति)

अर्थात् इस संसार में देवता, पितर, मनुष्य, याचक और अतिथि की पूजा करनी चाहिए अर्थात् उन्हें सम्मान देना चाहिए। इससे यश की प्राप्ति होती है।

मनुष्य मात्र के लिए जीवन उपयोगी महत्वपूर्ण बिन्दू

आलस्य में दरिद्रता का वास है और जो आलस्य नहीं करता है, उसके परिश्रम में लक्ष्मी बसती है।

परिश्रम वह सुनहरी चाबी है, जो खुद किस्मत के फाटक खोल देती है।

नम्रता से मुनष्य के ऐसे बहुत से काम बन सकते हैं, जो कठोरता से नहीं होते ।

काश, वन की **शान्त** छाया में मेरी एक कुटी होती, जिसमें पथगामी रुककर विश्राम ले पाते ।

मौन सर्वोत्तम भाषण है। क्रोध को जीतने में मौन जितना सहायक होता है, उतनी और कोई वस्तु नहीं।

होठों पर **मुस्कान** हर मुश्किल कार्य को आसान कर देती है। मुस्कान चेहरे का सच्चा सौन्दर्य है।

प्रसन्नता बसंत की तरह है जिसके आगमन पर हृदय की कलियाँ खिले फूल की तरह हँस पड़ती है।

अध्ययन हमें आनन्द तो प्रदान करता ही है, अंलकृत भी करता है और योग्य भी बनाता है।

प्रतिभा का विकास शांत वातावरण में होता है और चरित्र का विकास मानव जीवन के तेज प्रवाह में।

सत्य किसी व्यक्ति विशेष की सम्पत्ति नहीं है बल्कि ये सभी व्यक्तियों का खजाना है।

- संकलन- सत्य प्रकाश आर्य

योग आसन व प्राणायाम

प्राणायाम आज मनुष्य के लिए अत्यन्त उपयोगी है नियमित रूप से प्राणायाम करते रहने से हम शरीर में होने वाले अनेक विकारों से बच सकते हैं और अनेक विक्रत क्रियाओं को नियन्त्रित किया जा सकता है। प्राणायाम जैसा कि हमारे लिए अत्यन्त महत्व पूर्ण है वैसे ही हमें प्राणायाम के लिए अनेक बातों को भी समझना होगा।

प्राणायाम का लाभ तभी है जब हम शुद्ध सात्विक बनें अर्थात् हमारा आहार हल्का सुपाच्य हो आवश्यकता के अनुसार ही हो तात्पर्य है आहार सात्विक हो मिर्च मसालों से दूर रहें गरिष्ठ न हो चिकनाई युक्त न हो हरी शब्जियां दाल सलाद चपाती हो तब दिन में रात्रि के समय दुग्ध उपयुक्त रहता है फल व अंकुरित चना सोयाबीन अलसी आदि हो उचित समय पर भोजन किया जाय जब क्षुधा अधिक लगी हो।

प्राणायाम प्रातः काल सूर्योदय के समय व पूर्व तथा खुले रमणीक एकान्त स्थान में उपयुक्त रहते हैं स्थान पर किसी प्रकार का प्रदूषण नहीं होना चाहिए।

प्राणायाम खाली पेट करना चाहिए अथवा भोजन करने के कम से कम चार घण्टे पश्चात कर सकते हैं और प्राणायाम के आधा घण्टा पश्चात भोजन कर सकते हैं। कई आसन व प्राणायाम कुछ रोगियों को नहीं करने चाहिए खास उच्च रक्त चाप के रोगियों को कुम्भक नहीं करना चाहिए।

वातिक रोगियों को शीतली शीतकारी तथा पित्तवालों को सूर्य भेदी नहीं करना चाहिए। कोई भी आसन करते समय मन शान्त रहना चाहिए मन की चंचलता पर नियन्त्रण रखना चाहिए ईश्वर में ध्यान लगाना चाहिए। आसन के पश्चात शवासन अवश्य करें।

हम प्राणायाम के लिए प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय कुछ समय अवश्य निकाल सकते हैं इसे नियमित रूप से करते रहें हमारा शरीर व मन स्वस्थ रहेगा प्रसन्नता रहेगी भूख लगेगी आहार सात्विक व उचित मात्रा में लेते रहे दिन चर्या नियमित रहे तो हम आज के वातावरण में अपने शरीर को अधिक दिन स्वस्थ रख सकते हैं।

– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह
चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

हमारा परिवेश : क्या पुण्य? क्या पाप?

यदि 'यज्ञ-कर्म द्वारा वातावरण को शुद्ध करना पुण्य है, तो मोटर, जनरेटर, कारखानों, पटाखों आदि के धुएं से वातावरण को प्रदूषित करना पाप है।

– यदि अन्न-प्रदाता धरती को माता मानकर उसकी पूजा करना पुण्य है, तो उसी धरती माता की छाती में रासायन खादों का जहर भरना पाप है।

– यदि जल-संग्रहण, शुद्ध वायु, लकड़ी, फल, छाया, हरियाली के दाता वृक्षों को लगाना पुण्य है, तो भौतिकवादी ज़रुरतों का पूरा करने के लिए उन्हीं वृक्षों का काटकर उनकी जगह नए वृक्ष न लगाना पाप है।

– यदि नदियों में आचमन, स्नान आदि करना पुण्य है, तो उन्हीं नदियों के कूड़ा, मल, औद्योगि कचरा आदि डालना पाप है।

– यदि वाणी की मधुरता और वचनों की सरसता से शांति का प्रसार पुण्य है, तो लाउडस्पीकर की कर्कश ध्वनि से अशांति फैलाना पाप है।

– यदि मंत्र-ध्वनि, भजन-कीर्तन आदि सात्विक शब्दोच्चारण से वातावरण पवित्र करना पुण्य है, कटु, अश्लील, भद्दे तथा अनुचित शब्दों का उच्चारण पाप है।

– यदि पीड़ित को तत्काल न्याय देना पुण्य है, तो न्याय-प्रक्रिया में जानबूझकर अवरोध करना पाप है।

– यदि ज्ञान का प्रकाशित-प्रसारित करना पुण्य है, तो ज्ञान को सीमित रखना (एकस्व) पाप है।

– यदि औरों को सहारा देकर ऊपर चढ़ाना पुण्य है, तो औरों को धकियाकर या उनकी टांग खींचकर खुद आगे बढ़ना पाप है।

– यदि ईश-प्रेम-भक्ति के रस में डूबना पुण्य है, तो भौतिक वस्तुओं के नशे में मदहोश रहना पाप है।

– यदि इंद्रियों को वश में करके आराधन करना पुण्य है, तो इंद्रिय-सुख हेतु भोग-विलास में डूबे रहना पाप है।

– यदि पितरों का श्राद्ध करना पुण्य है, तो जीवित माता-पिता को त्रास देना पाप है।

– यदि उपवास करना पुण्य है, तो दूसरों का हक मारकर खाना पाप है।

– यदि दान देना पुण्य है, तो घूस लेना पाप है।

–प्रस्तुति ऋषभ यादव

शेष पृष्ठ 1 का ....

दोष के अनुरूप दण्डित किया जाना चाहिए।

महाभारत – वृक्ष अपने पुष्पों से ईश्वर का सम्मान करते हैं। अतिथियों का आवभगत फल से करते हैं। शीतल समीर तथा छाया से संपूर्ण जगत् को आनन्दित करते हैं।

धर्म ग्रन्थ – धर्म ग्रन्थों के अनुसार कमल विष्णु की नाभि से, कदम्ब कामदेव की हथेली से, पलास यम से और पीपल सूर्यदेव से जन्मे हैं। आमजनों में यह मान्यता है कि तुलसी व पीपल पर विष्णु, लक्ष्मी, ब्रह्मादेव, बरगद पर शिव, श्री हरि तथा कुबेर पर सोमलता, चन्द्रमा बेल पर माहेश्वर, आम पर लक्ष्मी, कदम्ब पर कृष्ण, नीम पर शीतला माई, पलास पर ब्रह्मा, गन्धर्व तथा तमाल पर भगवान कृष्ण विराजते हैं।

हम जिन देवताओं की पूजा करते हैं, वे सब किसी न किसी वृक्ष पर विराजते हैं।

ईसा से 200 वर्ष पूर्व, केरल में जन्मे महाकवि भास ने अपने नाटकों में ज्ञान विज्ञान के केन्द्र अनेक तपोवनों का उल्लेख किया है। महाकवि कालिदास ने भी अपने प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् में प्राचीन भारत की वनसम्पदा का मनोहारी चित्रण किया है। वृक्ष सज्जनों के समान वर्णित किए गए हैं।

भारत आरण्यक संस्कृति का देश रहा है। आश्रम तपोवन तथा गुरूकुल सभी वनों में प्रस्थापित हैं।

'रामचरित मानस' में गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं–

'पीपर तरु ध्यान जो धरई,
जाप यज्ञ पाकर तर करई ।
आवं छॉह करि मानस पूजा,
वट तर कह हरि प्रशंसै,
आवहि सुनाहि अनेक विहंगे।।

इन वृक्षों की छांह के नीचे मानस के पाठ, पूजा, दृष्टिकोण को सुनने के लिये अनेक पक्षीगण भी आया करते थे। पीपल वृक्ष अध्यात्म पूजा की पावन–स्थल माना जाता था।

वृन्दावन का निधि वन कृष्ण राधा की रासलीला का पावन स्थल है। काग् भुशुण्डि, गुरूड़ का संवाद नीलगिरि की सुरम्य वादियों में सम्पन्न हुआ था।

भगवान् ने गरुड़ का उद्धार किया था। यह वह गरुड़ है जिसने सीता की रक्षा के लिये रावण से युद्ध किया था । जख्मी होकर जब वह पृथ्वी पर मरणासन पड़े थे, तब भगवान् राम ने उनका उद्धार किया था। गिलहरी जिसने नन्हे मुंह में रेत के छोटे–छोटे कण ले जाकर रामसेतु के निर्माण में सहयोग किया, श्री राम ने उसे गोद में लेकर उसे प्यार किया था।

कृष्ण मोरों के संग खेलते थे। गायें चराते थे। राम ने वानरों की सेना सजा कर रावण से युद्ध किया था। लंका के सुषेण वैद्य के अनुसार–संजीवनी बूटी, शरीर, मन से परे आत्मा को ऊर्जा प्रदान करती है और इस बूटी से लक्ष्मण सचेत हुए थे।

भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है कि 'हे अर्जुन, मैं जल में रस हूं, चन्द्रमा और सूर्य में प्रकाश हूं, संपूर्ण वेदों में ओंकार हूं, आकाश में शब्द और पुरुषों में पुरुषत्व हूं।'

'हे अर्जुन, तू संपूर्ण भूतों का सनातन बीज मुझ को ही जान, मैं बुद्धिमानों की बुद्धि और तेजस्वियों का तेज हूं।'

'हे अर्जुन–मैं जब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूं। घोड़ों में उच्चैःश्रवा नाम घोड़ा, श्रेष्ठ हाथियों में ऐरावत। गौओं में कामधेनु हूं, नागों में शेषनाग, जलचरों में वरुण देवता हूं। पशुओं में मृगराज सिंह और पक्षियों में गरुड़, नदियों में गंगा हूं तथा मछलियों में मगर हूं। भगवान् कृष्ण संपूर्ण सृष्टि में विराजमान हैं। अतः यह सृष्टि पूजा के योग्य है। सृष्टि की पूजा ईश्वर की पूजा है।

शेष अगले अंक में.....

प्रभु के चरणों को छू कर निकले तो चरणामृत

पानी आकाश से गिरे तो– बारिश,
आकाश कि और उठे तो –भाप,
अगर जम कर गिरे तो –ओले,
अगर गिर कर जमे तो–बर्फ,
फूल परे हो तो –ओस,
फूल से निकले तो–इत्र,
जमा हो जाए तो –झील,
बहने लगे तो –नदी,
सीमाओं में रहे तो– जीवन,
सीमाएं तोड़ दे तो– प्रलय
आँख से निकले तो–आँसू,
शरीर से निकले तो –पसीना,
और प्रभु के चरणों को
छू कर निकले तो चरणामृत

दान की महिमा

दान की महिमा अपार है। दान को धर्म का एक मूलभूत तत्व या अंग माना गया है। लौकिक एवं पारलौकिक कल्याण हेतु दान देना अनिवार्य है। दान आदर्श जीवन का नित्यकर्म है, जिसका संपादन प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए।

एक बार देवता, मनुष्य और असुर अपने–अपने दुख की निवृत्ति हेतु पितामह ब्रह्माजी के पास गए तथा उनसे कातर प्रार्थना की। ब्रह्माजी ने तीनों को मात्र एक अक्षर का उपदेश दिया। वह अक्षर था 'द', जिसका भावार्थ तीनों प्रार्थियों के लिए भिन्न–भिन्न था। देवगण, जो कभी वृद्ध न होकर स्वर्ग मे भोग में ही रत रहते हैं, को 'द' के द्वारा प्रजापति ब्रह्मा ने इंद्रिय दमन का उपदेश दिया, मनुष्यों को, जो कर्मयोनि में जन्म लेकर लोभवश सांसारिक सुख–भोग तथा धन–संग्रह में ही मृत्युपर्यंत व्यस्त रहते हैं, उन्हें ब्रह्माजी ने दान देने की आज्ञा दी तथा स्वभावतः हिंसा–वृत्ति वाले क्रूर असुरों को 'द' के माध्यम से दुष्कर्म त्यागकर प्राणी मात्र पर दया करने की शिक्षा दी। इस प्रकार 'द' के तीन अर्थ हुए–इंद्रिय दमन, दान तथा दया, जो क्रमशः देवताओं, मनुष्यों तथा असुरों पर लागू हुए।

तात्पर्य यह कि अपने परम कल्याण के लिए मनुष्य को यथाशक्ति दान अवश्य देना चाहिए। दान को महान तप फल माना गया है। अतः दैनिक जीवन में संपन्न अन्य कर्तव्य–कर्म की भांति नित्य नियमपूर्वक दान भी देना चाहिए। शास्त्रों में सज्जनों के लिए न्यायपूर्वक अर्जित धन का दसवां अंश देने का विधान है।

दान की अनिवार्यता के विषय में तो यहां तक कहा गया है कि जितने से पेट भरे उतने पर ही मनुष्य का अधिकार है, उससे अधिक पर जो अधिकार जमाता है, वह चोर है तथा दंड का भागी है।

हमारी गौरवमयी सांस्कृतिक परंपरा में कलियुग में दान को ही परम कल्याणकारी साधन बताया गया है– **'दानमेकं कलौ युगे।'** वेद का भी उपदेश है– 'शतहस्त समाहर सहस्रहस्त सं किर।' अर्थात सौ हाथों से धन का उपार्जन करो और हजार हाथों से उसे दान के रूप में बांट दो। दान देने से सद्वृत्तियों का विकास होता है तथा त्याग की भावना दृढ़ होती है। दान आत्मशुद्धि का श्रेष्ठ साधन है। दानी की त्याग–वृत्ति उसे सभी का प्रियपात्र बना देती है, यहां तक कि दान से तो देवता भी वशीभूत हो जाते हैं।

दान देने से धन घटना नहीं, अपितु उसमें निरंतर वृद्धि होती रहती है। कुएं से पानी निकालने पर उसमें एकत्र पानी अधिक गतिशील एवं शुद्ध हो जाता है। इस विषय में ठीक ही कहा गया है–

तुलसी पंछिन्ह के पिये सागर घटै न नीर ।
दान दिए धन ना घटै जो सहाय रघुवीर ।।

दान की महिमा का निरूपण करते हुए शास्त्रों में उल्लेख है कि याचक दाता का उपकार करने के लिए ही उसके सामने 'दीजिए' कहकर याचना करता है, क्योंकि दाता तो ऊपर के लोक में जाता है और दान लेने वाला नीचे रह जाता है।

सद्ग्रंथों में ही वर्णित है कि सैकड़ों मनुष्यों में कोई शूरवीर हो सकता है, सहस्रों में कोई पंडित भी मिल सकता है तथा लाखों में कोई वक्ता भी निकल सकता है, किन्तु इनमें एक भी दाता हो सकता है या नहीं, इसमें संदेह है।

वास्तव में संसार में दान देने से बढ़कर कोई अन्य दुष्कर कार्य नहीं है? क्योंकि दिन–रात कठिन परिश्रम से अर्जित, प्राणों से भी प्रिय धन–संपत्ति को दान के द्वारा त्यागना निश्चय ही बड़ा कठिन कार्य है। दान में दिया जाने वाला धन कभी घटता नहीं। दान के द्वारा दाता एक ही जन्म में अन्य अनेक जन्मों के लिए पुण्य अर्जित कर लेता है। संसार में दानवीरों की कीर्ति सदा अक्षुण्ण बनी रहती है। राजा शिबि, दधीचि, निमि, बलि, कर्ण, परशुराम, राजा हरिश्चंद्र, हर्षवर्धन आदि दान के कारण ही अमर हो गए।

देवताओं ने केवल क्षुधा की ही सृष्टि नहीं की, बल्कि मृत्यु को भी बनाया है। जो बिना दान दिए हुए ही खाता है, उस व्यक्ति को भी मृत्यु के समीप जाना पड़ता है। दाता का धन कभी क्षीण नहीं होता। दान न देने वाले मनुष्य को कभी सुख प्राप्त नहीं होता है।

घर आकर मांग रहे अति दुर्बल शरीर के याचक को जो भोजन देता है, उसे यज्ञ का पूर्ण फल प्राप्त होता है तथा वह अपने शत्रुओं को भी मित्र बना लेता है।

जो याचक को दान करता है, वही धनी है। उसे कल्याण का शुभ मार्ग प्रशस्त दिखायी देता है। वैभव–विलास रथ के चक्र की भांति आते–जाते रहते हैं। किसी समय एक के पास संपदा

रहती है, तो कभी दूसरे के पास निवास करती है।

जिसका मन उदार न हो, जिसकी दान में रुचि न हो, वह व्यर्थ ही अन्न पैदा करता है। संचय ही उसकी हानि, मृत्यु का कारण बनता है। जो न तो देवों को हविष्य–दान से तृप्त करता है और न ही मित्रों को तृप्त करता है, वह वास्तव में पाप का ही भक्षण करता है।

जो जीवननोपयोगी अन्न आदि का दान करते हैं, उनके लिए यह पुण्य–फल सुरक्षा कवच के रूप में कष्ट–कठिनाइयों से रक्षा करने वाला होता है।

जो व्यक्ति धनवान होने पर भी घर आए हुए दुर्बल एवं अन्न की याचना करने वाला भिक्षुक के प्रति दान देने के लिए अपने अंतःकरण को निष्ठुर कर लेता है तथा उसके सामने ही उसे तरसाकर खाता है, उस महाक्रूर को कभी सुख प्राप्त नहीं होता ।

गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने दान का तीन प्रकार से विभाजन करते हुए सात्विक दान की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। दान देना ही कर्तव्य है– ऐसे भाव से देश, काल और सत्पात्र के प्राप्त होने पर जो दान उपकार न करने वाले के प्रति दिया जाता है, वह दान सात्विक कहा गया है।

वास्तव में दान सामाजिक यज्ञ अथवा परोपकार का ही एक अभिन्न अंग है, यह सामाजिक व आर्थिक विषमता तथा द्वेष–विवाद को दूर करने का उपयुक्त साधन है। संसार के महान दानवीरों ने दान के माध्यम से समाज में समरसता, समानता तथा बंधुत्व की उदात्त भावना को प्रोत्साहित किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मानव जीवन को आदर्शमय बनाने तथा उसके अभ्युदय एवं निःश्रेयस के लिए यथाशक्ति दान देना अति आवश्यक है। श्रद्धायुक्त, विनम्र भाव से दिया गया दान जीवन को सच्चे अर्थों में सार्थक बनाता है। अतः लौकिक एवं पारलौकिक परम कल्याण के लिए उदारतापूर्वक दान देने की शास्त्रीय व्यवस्था है। दान देते समय मन सर्वथा शुद्ध, सरल तथा निरभिमानयुक्त होना चाहिए, क्योंकि समस्त धन भगवान का है, उसे अपना मानना नैतिक अपराध है। सर्वत्र और सभी पदार्थों में परमात्मा का निवास है, अतः दान लेने वाले भी भगवान ही तो हैं। 'हम किसी पर उपकार कर रहे हैं' – ऐसी भावना मन में अविनय एवं अभिमान को जन्म देती है। अतः अभिमान एवं स्वामित्व की भावना से रहित होकर या अभिमान से ऊपर उठकर ही कर्तव्य–कर्म समझकर दान देना श्रेयस्कर है।

क्या आप जानते हैं? अपने शरीर की खास बातें

वैज्ञानिकों को हैरान करता है इंसान का शरीर क्योंकि इसमें जितनी बारीकियां है उनकी पकड़ से बहुत दूर हैं।

1-**धडकन** :एक स्वस्थ इंसान का हृदय हर दिन 100,000 बार धड़कता है साल भर में यह 3 करोड़ से अधिक बार धड़क चुका होता है दिल का पम्पिंग प्रेशर इतना तेज होता है कि वह खून को 30 फुट ऊपर उछाल सकता है।

2-**सारे कैमरे और दूरबीन फेल** :इंसान की आंख एक करोड़ रंगों से बारीक अंतर पहचान सकती है। फिलहाल दुनिया में ऐसी कोई मशीन नही है जो इसका मुकाबला कर सके।

3-**नाक में एयर कंडीशनर** :हमारी नाक में प्राकृतिक एयर कंडीशनर होता है। यह गर्म हवा को ठंडा और ठंडी हवा को गर्म कर फेफड़ो तक पंहुचाता है।

4- **400 किमी प्रतिघंटा की स्पीड** : तंत्रिका तंत्र 400 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से शरीर के बाकी हिस्सों तक जरूरी निर्देश पहुंचाता है। इंसानी मस्तिष्क में 100 अरब से ज्यादा तंत्रिका कोशिकाएं होती हैं।

5-**जबरदस्त मिश्रण** : शरीर में 70 फीसदी पानी होता है। इसके अलावा बड़ी मात्रा में कार्बन, जिंक, कोबाल्ट, कैल्शियम,मैग्नीशियम,फॉस्फेट, निकिल और सिलिकॉन होता है।

6-**बेजोड़ छींक** : छीकतें समय बाहर निकले वाली हवा की रफ्तार 166 से 300 किमी प्रतिघंटा हो सकती है। आँखें खोलकर छींक मारना नामुंमकिन है।

7-**जबर दस्त फेफड़े** : हमारे फेफड़े हर दिन 20 लाख लीटर हवा को फिल्टर करते हैं हमें इस बात की भनक भी नहीं लगती। फेंफड़ों को अगर खींचा जाए तो यह टेनिस कोर्ट के एक हिस्से को ढक देंगे।

8- **ऐसी और कोई फैक्ट्री नही** : हमारा शरीर हर सेंकंड़ 2.5 करोड़ नई कोशिकाएं बनाता है। हर दिन 200अरब से ज्यादा रक्त कोशिकाओं का निर्माण करता है। हर वक्त शरीर में 2500 अरब रक्त कोशिकाएं मौजूद होती हैं एक बूंद खून में 25 करोड़ कोशिकाएं होती हैं।

9-**लाखों किलोमीटर कि यात्रा** : इंसान का खून हर दिन शरीर में 1,92,000 किमी सफर करता है। हमारे शरीर में औसतन 516 लीटर खून होता है जो हर 20 सेंकेड़ में एक बार पूरे शरीर में चक्कर काट लेता है।

माह जून 2018 के आर्थिक सहयोगी

श्री जगदीश मदान जी, राजेश कालोनी पश्चिमी, जगाधरी, हरि. (आजीवन सदस्यता शुल्क)		2100/–
आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	मासिक	1000/–
ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सै.–15, फरीदाबाद	मासिक	1000/–
आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	मासिक	800/–
आर्य समाज इन्द्रा नगर, बगलौर	मासिक	700/–
श्री शिवकुमार मदान जी, ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	मासिक	700/–
श्री चतर सिंह नागर जी, महामंत्री, शुद्धि सभा	मासिक	500/–
श्रीमती वासंती चौधरी जी, अशोक विहार, फेज–1 दिल्ली	मासिक	500/–
श्री जगदीश मदान जी, राजेश कालोनी पश्चिमी, जगाधरी, हरि.	आजीवन सदस्य	500/–
श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	मासिक	100/–
चौ. करतार सिंह जी, शिवाजी नगर शाहगंज आगरा	शुल्क	100/–
श्रीमती राज कुमारी सेठी विजय नगर, दिल्ली		50/–

श्रीमती संतोष चावला जी (आर्य महिला आश्रम), द्वारा एकत्रित दान

श्री गोविन्द कांकरवाल, एवं श्रीमती बरखा जी, नई दिल्ली	1100/–
श्रीमती कैलाश कपूर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	500/–
श्रीमती कमला डाबर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	200/–
बेबी सौम्या सुपुत्री डॉ. देवेश प्रकाश आर्य, आर्य महिला आश्रम	200/–
श्रीमती कांता नागपाल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	200/–
श्रीमती राजश्री जी, प्रशाद नगर, करोल बाग, नई दिल्ली	100/–
श्रीमती संतोष बहल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती नीरजा जैन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती आशी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती प्यारी देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती बीना कपिल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
डॉ. दीपक जी, दन्त चिकित्सक, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती मृदुला रस्तोगी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती शकुन्तला दीवान जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती मन्जू सेठी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	100/–
श्रीमती संतोष हिंगल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती निर्मल शर्मा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती शोभा आचार्य जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती अविनाश मल्होत्रा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती कृष्णा खेड़ा जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती इंदू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती भगवती देवी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती शुक्ला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–
श्रीमती कैथरीन जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर नई दिल्ली	50/–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018

दिल्ली (भारत) 25 से 28 अक्टूबर 2018
तदनुसार कार्तिक कृष्ण 1, 2, 3, 4 विक्रमी संवत् 2075
–: सम्मेलन स्थल :–
स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर–10, दिल्ली, भारत

महासम्मेलन में आप सभी इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।
संगठनात्मक एकता हेतु लाखों की संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

निवेदक :

प्रकाश आर्य (मंत्री)
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा
9826655117

धर्मपाल आर्य (सम्मेलन संयोजक)
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
9810061763

R.N.I. No. 43084/76 Date of Publication 01-7-2018 (pages 8) Posting Date : 2-3 Every Month
Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 060/2018-20

सेवा में,

शुद्धि समाचार
जुलाई – 2018

ज्ञान से प्राणियों की रक्षा

– डॉ. अशोक आर्य

जब हम लोकहित की कामना करते हैं तो इसके लिए ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। भुवपति शास्त्र तथा भुवन पति शास्त्र दोनों प्रकार के ज्ञान में, पदार्थ में तथा इसके प्रयोग में हम निपुण होकर जीव मात्र के रक्षक बनें। यजुर्वेद का यह दूसरे अध्याय का दूसरा मंत्र इस पर ही उपदेश करते हुए कह रहा है कि:

आदित्यै व्युन्दनमसि विष्णो स्तुपोऽस्यु
र्णम्रदसं त्वा स्तृणामि त्वासस्थां
देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये
स्वाहाभूतानां पतये स्वाहा/

।। यजुर्वेद 2.2।।

हम जानते हैं कि प्रजापति अग्नि को प्रचंड़ करने के लिए, ज्ञान कि अग्नि को प्रचंड करने के लिए हमें ज्ञान श्रवण स्वरूप अर्थात ज्ञान का चम्मच, जिससे ज्ञान रूपी यज्ञ में ज्ञान रूपी घी डाल सकें, ऐसा श्रवण बनना होता है। इसके बिना ज्ञान कि अग्नि जल नहीं सकती। यह व्यक्ति इस ज्ञान श्रवण के कार्य में क्यों तत्पर हुआ है, क्यों लगा है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर यह मंत्र. देते हुए उपदेश करता है कि:

2- हमारा स्वास्थ्य उत्तम हो: उत्तम स्वास्थ्य से ही मानव जीवन के सब कार्य सिद्व होते हैं यदि हम स्वस्थ न हों तो बिस्तर पर पड़े-पड़े कराहते रहते हैं कुछ कर नहीं सकते। अकर्मण्य हो जाते हैं, असहाय हो जाते हैं इसलिए मंत्र कहता है कि हमने स्वास्थ्य के लिए देव माता कि स्तुति करनी है। भाव यह है कि हे जीव! तेरे अंदर दूसरों को स्वस्थ रखने वाला ज्ञान हो। दूसरों को र खने के लिए ज्ञान रूपी एक विशेष प्रकार के जल से तू प्राणी मात्र को भिगो ने वाला बन ज्ञान रूपी जल से मात्र नहला दे, उसे ज्ञान का स्नान कराने वाला है। इस प्रकार तू अन्य लोगों को स्वस्थ बनाने के साथ ही साथ दिव्य गुणों से सम्पत्र करने वाला बन। ये सब करने के लिए ज्ञान रूपी विशेष जल से इन्हें भिगो दे। जब तू ज्ञान का प्रसार कर ता है तो सब लोगों के जीवन स्वस्थ बन ते चले जाते है क्योंकि इससेअन्य लोग भी ज्ञान के भंडारी बन जाते हैं। इस ज्ञान के प्रयोग से वे भी अपने अंदर के सब कलुष धोनें मे सफल होते है। कलुष धुल जाने से उनके भी रोगाणु नष्ट हो जा ते है और स्वस्थ रहने के योग्य बन जाते है। इससे ही उनके जीवन में दैवीय सम्पत्ति का आगमन होता है।

3-लोकहित के कार्य कर : हे जीव! तू ही यज्ञ का शिखर है, ज्ञान की छत है तू ही उन लोगों का मूर्धन्य है जिन का जीवन यज्ञमय होता है इसलिए तेरा यह जीवन सदा ही लोकहित के कार्यों, अन्यों के उत्तम के लिए लगा रहे इस कारण तू अपने प्रत्येक कार्य में पहले हित – अहित का परीक्षण करता है तथा वह कार्य ही करना उत्तम समझता है जिसमें दूसरों का हित हो। परहित का ही सदा ध्यान रखता है इस प्रकार तू व्यक्ति गत स्वार्थ से ऊपर उठ गया है।

4-दूसरे के सहायक के प्रभु सहायक होते है:हे जीव ! तू निरंतर जनहित का लोक हित का ध्यान रखने वाला है तू मूर्धन्य होकर औरों के जीवनों को ऊपर ले जाने वाला, ऊपर उठाने वाला है। सबकी प्रगति की भावना तुझ में है तू केवल अपनी हि उन्नति नही चाहता बल्कि सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति देखना है। तू किसी का भी बुरा नहीं चाहता बल्कि सबका हित चाहता है, सबको आच्छादित करता है। तू मृदु स्वभाव वाला है सदा मधुर ही मधुर, मीठा बोलने वाला है इसलिए मैं तुझे अपनी शरण मैं अपनी छत्रछाया में रखता हूँ।

जिस प्रकार हमारे घरों की छत सर्दी, गर्मी तथा वर्षा आदि से हमारी रक्षा करतीहै, उस प्रकार ही मै तुझे अपनी छत दे रहा हूँ ताकि तू आसुरी आक्रमणों से, राक्षसी प्रवृत्तियों से से बचा रह सके, आसुरी प्रवृत्तियों का तुझ पर हमला न हो सके, इनसे तेरी निरन्तर रक्षा हो सके।

इस प्रकार परम पिता परमात्मा कि शरण में आने से हम सुरक्षित हो जाते है। जो प्रचार का कार्य हम करते हैं। इस प्रकार का कार्य करते हुए अनेक जन ऐंसे होते हैं जो दूसरों को उपदेश देते है, उस उपदेश को दूसरों के लिए ही समझते हैं स्वयं पर अपने ही उपदेशं करने वाले तो अनेक मिल जाते है किन्तु स्वयं पर लागू करने वाले बहुत कम मिलते है।

5- लोक हितकारी को प्रभु दि व्यगुण देता है: परमपिता परमात्मा कहते हैं कि हे जीव ! तेरे लिए यह ही आशीर्वाद है कि मैं तुझे दिव्य गुण देता हूँ। तूने दूसरों को आगे बढ़ाना है। इस कार्य के लिए तेरे पास अनेक प्रकार के दिव्य गुणो का होना आवशयक है। वे सब दिव्य गुण मैं तुझे देता हूँ।

6- लोक हित के कारण तू स्वाहा का अधिकारी है: परमपिता परमात्मा इस मंत्र के माध्यम से हमें उपदेश दे रहें हैं कि हम उपदेश करते समय केवल दूसरों की कमियों निकालने में लगे रहें। मीठे शब्दो में प्रचार कार्य करना चाहिए। जो ज्ञान के प्रसारक इस प्रकार के प्रचार करते, प्रभु उनकी रक्षा करते हैं। यह एक क्रियात्मक, एक व्यावहारिक तथा एक प्रयोगात्मक ज्ञान है तेरे इस ज्ञान की वाणी लोगों को अत्यधिक प्रभावित करने वाली है क्योंकि इसमें आगम तथा प्रयोग,दोनो प्रकार के ज्ञानों की निपुणता स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

इस कारण ही हे सब प्रकार के ज्ञानों के स्वामी मानव ! तेरी यह कल्याणकारी ज्ञान से भरपूर वाणी अत्यंत प्रभावोत्पादक है। इससे दूसरों को अत्यधिक लाभ हो रहा है इसलिए तू स्वाहा शब्द का अधिकारी हो गया है। अत: मैं तुझ सब प्राणियों की रक्षा करने वाले को स्वाहा जैसे शुभ शब्दों का उच्चारण करने का अधिकारी बनाता हूं। इस शुभ शब्द से तू सबका उपकार करने में सफल होगा।

मीठे शब्दों में सब कुछ समझाना चाहिए, सब ज्ञान देना चाहिए।

करूणा का कर्ज

ईश्वरचंद विद्यासागर के बारे में सभी जानते हैं कि वह एक करूणामय, सहिष्णु और परोपकारी व्यक्ति थे। किसी के सुख-दु:ख में शरीक होना या किसी की मदद के लिए दौड़ पड़ना जैसे रोज का नियम ही हो गया था। एक बार उन्हें पता चला कि कस्बे के ही जयराज नामक दयालू, दानवीर और परोपकारी सज्जन की मृत्यु हो गई है और उसकी पत्नी के पास अंतिम क्रिया तक के पैसे नहीं हैं। विद्यासागर जयराज को नहीं जानते थे। पर जब उन्होंने अंतिम क्रिया के लिए पैसे न होने की बात सुनी तो किसी तरह पूछताछ करते-करते जयराज के घर पहुंच गए। उन्होंने जयराज की विधवा को ढांढस बंधाया और श्रद्धा सुमन अर्पित करके एक किनारे बैठ गए। जब आने जाने वालों की भीड़ कम हुई तो विद्यासागर जयराज की विधवा के पास दोबारा गए और उससे बोले – ''मैं और जयराज दोनों अच्छे मित्र थे और दोनों ही एक दूसरे के सुख-दु:ख में काम भी आते थे। मैंने अपने बुरे वक्त में उनसे कुछ रूपये कर्ज स्वरूप लिए थे। आज मैं वही रूपये लेकर उनके पास आ रहा था, तभी यह दुखद समाचार मिला। अब वह तो रहे नहीं, सो आप ही यह कुछ रूपये रख लीजिए। बाकी राशि भी मैं धीरे-धीरे चुका दूंगा।'' जयराज की पत्नी ने रोते हुए वह रूपये पकड़ लिए। भविष्य में भी विद्यासागर उस औरत के लिए एक निश्चित धनराशि प्रतिमाह भेजते रहे। कई वर्षों के पश्चात उस विधवा औरत को वास्तविकता का पता चला तो वह उनके इस अनूठे झूठ पर अचरज से भर उठी। वह अपने लड़कों के साथ विद्यासागर से मिलने गई और उनके चरणों में गिरकर रोने लगी और बोली- ''आपने हमारे बुरे वक्त में सहारा दिया, हम यह कर्ज कैसे चुका पाएंगे?''

विद्यासागर बोले-''बहन, तुम्हारे इन आंसुओं ने यह सारा कर्ज चुका दिया है। दिल पर कोई बोझ लिए बिना अपने घर जाओ ।

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की बैठक

भारतीय हिन्दू शुद्धि ट्रस्ट के ट्रस्टियों एवं शुद्धि सभा के अंतरंग सदस्यों की बैठक शनिवार दिनांक 14 जुलाई 2018 को क्रमशः प्रातः 10 बजे तथा 10:30 बजे आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली –60 में होना निश्चित हुई है। –महामंत्री

मुद्रक, व प्रकाशक – रामनाथ सहगल द्वारा गुरमत प्रिंटिंग प्रेस, 1337, संगतरासन, पहाड़ गंज, नई दिल्ली–55 दूरभाष : 23561625, से मुद्रित एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली–7 दूरभाष : 23857244 से प्रकाशित। सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, सह–सम्पादकः डॉ. देवेश प्रकाश आर्य